सरकारी वेतनमान और रचनात्मक कार्यकर्ता

रजि० नं० बी ४४४८

# हरिजनसेवक

पृष्ठ १८
दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ४९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २ फरवरी, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## 'हरिजन' पत्र

सन् १९४६ के बादसे 'हरिजन' पत्रोंके ग्राहक कम होते गये हैं। फिर भी वे अपना खर्च निकाल लेते थे। परन्तु पिछले दो-अेक सालसे अुनकी ग्राहक-संख्या अितनी ज्यादा घटती गओी है कि अुनके कारण नवजीवन ट्रस्टको भारी घाटा सहना पड़ रहा है। अिसमें कोओी सुधार नहीं होता, अुलटे ग्राहक-संख्या दिनोंदिन घटती ही जा रही है। अिस तरह घाटा सहकर पत्र चलानेकी नीति गांधीजीको मान्य नहीं थी। और अिन पत्रोंमें विज्ञापन लेना नवजीवन ट्रस्टकी नीतिके खिलाफ है। अिसलिअे सारी परिस्थितिका विचार करके नवजीवन ट्रस्टको बड़े दुःखके साथ अिस निर्णय पर आना पड़ा है कि पत्रोंके नये सालसे, अर्थात् मार्च १९५२ से, ये तीनों पत्र बन्द कर दिये जायं। अिसलिअे सब ग्राहकोंको तथा अिन पत्रोंके अनेक पाठकोंको यह सूचित किया जाता है कि माच १९५२ से तीनों 'हरिजन' पत्रोंका प्रकाशन नवजीवन ट्रस्टकी तरफसे बन्द कर दिया जायगा। हमारे देशके सार्वजनिक जीवनको गढ़नेमें अिन पत्रोंका कितना बड़ा हाथ रहा है, यह कहनेकी जरूरत नहीं। लेकिन अुनकी ग्राहक-संख्याको देखते हुअे अूपरका निर्णय किये सिवा कोओी चारा नहीं है।

१९-१-'५२ जीवणजी डा० देसाओी
व्यवस्थापक ट्रस्टी

**पुनश्च** :— अूपरके नवजीवन ट्रस्टके निर्णयके बारेमें जाननेके बाद श्री सर्व-सेवा-संघ, वर्धाकी ओरसे यह मांग आओी है कि अंग्रेजी 'हरिजन' हम अपनी जिम्मेदारी पर चलाना चाहते हैं। अुस पर विचार करके अंग्रेजी 'हरिजन' संघको सौंपा जाता है। संघ अुसे गांधीजीकी नीतिके अनुसार और विज्ञापन लिये बिना चलायेगा। अिसलिअे पाठकोंकी दृष्टिसे तीनों पत्र नहीं, बल्कि हिन्दी और गुजराती दो पत्र ही बन्द होंगे। अंग्रेजीके ग्राहकों तथा अेजन्टोंसे यह बात ध्यानमें रखनेकी विनती है कि अंग्रेजी 'हरिजन' सर्व-सेवा-संघकी तरफसे चालू रहेगा। अिसके बादके अंकमें अिस सम्बन्धमें मैं अधिक विस्तृत जानकारी अुन्हें दूंगा।

२६-१-'५२ जी० देसाओी

## उत्तरकी दीवारें

लेखक : काका कालेलकर; अनुवादिका : शकुन्तला

कीमत ०-१४-० डाकखर्च ०-३-०

## सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-३-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

## सर्वोदयका अर्थ

[यह लेख समयके अभावके कारण थोड़ा संक्षेप करके अहमदाबाद रेडियो केन्द्रसे ता० २६-१-'५२ को पढ़ा गया था। वह अहमदाबाद रेडियोकी अिजाजतसे यहां दिया जाता है।

— म० देसाओी]

आज २६ जनवरी है। यह दिन हमारे राष्ट्रके अितिहासमें अेक महान दिन है। दिवाली या नये वर्षकी तरह अिसे खुशीका दिन समझना चाहिये। आजके दिन सन् १९३० में राष्ट्रने शपथ ली थी कि हम देशको पूर्ण स्वतंत्र बनाकर ही चैन लेंगे। अुस पूर्ण स्वराजको लानेके लिअे हमने सत्याग्रहकी लड़ाओी चलानेका निश्चय किया और पूज्य गांधीजीके मार्गदर्शनमें लड़ाओी शुरू की। अीश्वरने अुसमें हमें सफलता प्रदान की और १५ अगस्त, १९४७ के दिन अंग्रेज हमारे देशकी सत्ता प्रजाकी प्रतिनिधि सरकारके हाथमें सौंपकर चले गये।

अुसके बादके चार वर्षोंका अितिहास ताजा है। हमारी विधान-सभाने देशका स्वतंत्र विधान बनाया और भारतके स्वतंत्र सार्वभौम गणराज्यकी स्थापना हुओी। २६ जनवरी, १९५० को घोषणा होकर अुसका आरम्भ हुआ। अिस तरह २० बरस पहले राष्ट्रने पूर्ण स्वतंत्रताकी जो शपथ ली थी वह पूरी हुओी।

अब सवाल हमारे सामने यह है कि मिली हुओी स्वतंत्रताका सदुपयोग किस तरह किया जाय, जिससे देशमें सच्चे स्वराज्यकी स्थापना हो? स्वतंत्रता अेक साधन है; अुसके जरिये हमें देशका हित साधना है। अब सबसे बड़ा सवाल हमारे सामने यही है कि अिस ध्येयको पूरा करनेके लिअे क्या किया जाय? अिस सवालका जवाब है — सर्वोदय। यह जवाब हमें गांधीजीने दिया है। यह हमारे राष्ट्रका आदर्श है। अतः सर्वोदयका अर्थ क्या है, अिस पर हम कुछ मिनटोंमें विचार करें।

यह शब्द गांधीजीका बनाया हुआ है। १९वीं सदीमें हो गये रस्किन नामके अेक प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वानने 'अन्टु धिस लास्ट' नामक अेक पुस्तक लिखी है। अुसका अनुवाद गांधीजीने 'सर्वोदय' नामसे किया। रस्किनके जमानेमें समाजका जो आदर्श था, अुसे 'अुपयोगितावाद' के नामसे पुकारा जाता था। वह वाद कहता था कि यथासंभव अधिकसे अधिक लोगोंका अधिकसे अधिक भला किया जाय। यही व्यावहारिक आदर्श है। लेकिन रस्किन अिस वादको स्वीकार नहीं करता था। वह अपनी पुस्तकमें कहता है कि सबका श्रेय होना चाहिये — सबका अुदय होना चाहिये। अिस चीजको समझाते हुअे गांधीजीने जो कहा है, वह खास तौर पर याद रखने जैसा है:

"अहिंसाका पुजारी अुपयोगितावादके सिद्धान्तकी पूजा नहीं कर सकता। वह तो सारी सृष्टिके श्रेयके लिअे प्रयत्न करेगा और अुस आदर्शको सत्य बनानेके प्रयत्नमें मर मिटेगा।

www.vinoba.in

अिस तरह दूसरे जीयें, अिसके लिअे खुद मरनेमें वह खुशी मानेगा। खुद मरकर वह दूसरे सबकी सेवा करेगा और अुसीमें अुसकी अपनी सेवा भी आ जायगी। सबकी अैसी सर्वोच्च सेवामें 'अधिक संख्याका अधिक भला' तो आ ही जाता है। और अिसलिअे बहुत बार अैसा श्रेयवादी और अुपयोगितावादी दोनों अपने मार्गमें अेक-दूसरेके कदम पर कदम रखकर चलते दिखाअी देंगे। लेकिन अैसा होते हुअे भी अेक समय तो अैसा आयेगा ही जब कि अुन्हें अेक-दूसरेसे जुदा होना होगा। संभव है किसी समय अुन्हें अेक-दूसरेके विरुद्ध भी काम करना पड़े। अुपयोगितावादी अगर अपने सिद्धान्तका दृढ़तासे पालन करे, तो वह अपने आपका भोग कभी नहीं चढ़ायेगा, नहीं चढ़ा सकता। अिसके विपरीत, सबके श्रेय — कल्याण पर दृष्टि रखनेवाला श्रेयवादी अपनी कुरबानी देनेमें भी पीछे नहीं हटेगा।" (नवजीवन, १२-१२-'२६)

आज दुनियाके लोगोंके सामने बड़ा दुःख कौनसा है? जैसा कि अभी हालके अपने अेक भाषणमें राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबूने बताया है, जगत आज दो बातोंसे दुःखी है: अेक, युद्ध; दूसरी, तंगी और गरीबी। गरीब और लाचार लोग दुनियामें बहुत ज्यादा हैं; धनी और बलवान लोग थोड़े हैं। दुनियाके सारे देशोंमें अिसी तरह लोगोंके दो भाग हैं। छोटे-छोटे देश और पिछड़ी हुअी जातियां अनेक हैं; बड़े देश और आगे बढ़ी हुअी प्रजायें थोड़ी हैं। अिस प्रकारकी जो असमानता, विषमता है, अुसे कैसे दूर किया जाय? कौनसा आदर्श सामने रखकर चला जाय? आजकी दुनियाके सामने यही सबसे बड़ा सवाल है।

अिसका जवाब कअी तरहसे दिया जाता है। अुसके दो-तीन बड़े हिस्से हो जाते हैं। अेक जवाब यह है कि गरीब लोगोंको अपने अधिकारोंके प्रति जाग्रत होना चाहिये और संगठित बनकर विरोधी लोगोंसे लड़ लेना चाहिये। क्योंकि अिन दो वर्गोंके बीच विग्रहका रास्ता अख्तियार किये सिवा कोअी चारा नहीं। बलवान लोग अिसके बिना माननेवाले नहीं हैं। यह रास्ता वर्ग-विग्रहका या हिंसाका रास्ता हुआ।

अिसी तरह विचार करके समाजके धनी और बलवान वर्गके लोग भी कहते हैं कि हमें संगठित होकर काम करना चाहिये, वर्ना बहुमतवाले लोग हम पर चढ़ बैठेंगे और अंधाधुंधी फैलाकर देशको बरबाद कर देंगे। यह दृष्टिकोण भी अंतमें तो वर्गोंके बीच विग्रहकी भावना पैदा करके ही काम करनेवाला है, और समाज पर छोटेसे वर्गकी निरंकुश सत्ता कायम करनेवाला बन सकता है।

अिस तरह अगर दोनों वर्ग वैरभावसे अेक-दूसरेके साथ लड़ने लगें, तो फिर अुसमें अच्छा क्या और बुरा क्या, अिसका भान नहीं रहता। और जिस रास्ते काम बने वही सच्चा, अिस तरह साध्य और साधनके बीच कोअी सम्बन्ध नहीं रहता। काम पूरा करनेके लिअे अच्छे-बुरे कैसे भी साधनोंका अुपयोग किया जाता है। नतीजा यह होता है कि साध्य भी साधनोंकी तरह ही दूषित हो जाता है और प्रजाका दुःख मिटता नहीं। गांधीजीका सर्वोदयका आदर्श अिससे भिन्न है। वह सत्य और अहिंसाके साधनोंको पहला स्थान देता है। सर्वोदयका सिद्धान्त यह मानता है कि जिस हद तक सत्य और अहिंसाके साधन छोड़े जाते हैं, अुसी हद तक साध्य दूर हो जाता है और बिगड़ता है। अिसलिअे वह वर्ग-विग्रहके रास्तेको गलत और त्याज्य मानता है। यह सही है कि समाजके अलग-अलग वर्गोंके बीच खींचतान है। लेकिन अुससे यह तो कैसे कहा जा सकता है कि वह अच्छी है और रहनी या रखी जानी चाहिये? यह सच है कि अिस खींचतान या संघर्षको दूर करना चाहिये। लेकिन आपसकी लड़ाअीसे वह दूर नहीं हो सकती। समाजमें सर्वोदय धर्मकी स्थापना करनेसे ही वह दूर की जा सकती है। यह धर्म नैतिक होनेके साथ ही सामाजिक और आर्थिक भी है। सामाजिक दृष्टिसे वह कहता है कि समाजमें कोअी अूंचा-नीचा नहीं है; जो समाज जात-पांत, कुल, धन-दौलत, धन्धे वगैराके कारण अपने वर्गोंमें अूंच-नीचका भाव बढ़ाता है, वह भूलता है। हमारे देशमें श्रम अथवा मजदूरी या अंग मेहनतको हलकी और नीची चीज माना गया है। हमारी शिक्षा-प्रणाली भी आज अिसी मान्यता पर चलती है। अैसे कुछ धन्धोंको हम हमेशा हलके मानते रहे हैं, जो समाजके लिअे अत्यन्त जरूरी हैं और अुनके करनेवालोंको हम अछूत तक समझते रहे हैं। अुनके अिज्जतके साथ देवी-देवताके दर्शन करनेमें भी हमें अेतराज होता है। यह भावना अगर दूर न हुअी, तो आजादी आनेका कोअी अर्थ ही न रह जायगा। और यदि श्रमकी महिमा हमारे राष्ट्रमें न समझी गअी, तो सदियोंसे घर की हुअी बेकारी, आलस और कंगाली वगैरा जैसी बलायें दूर नहीं की जा सकतीं। सर्वोदयका सिद्धान्त सामाजिक क्षेत्रमें हमसे अिस प्रकारकी क्रान्ति चाहता है। अब अिसका आर्थिक पहलू देखें।

आर्थिक दृष्टिसे यह सिद्धान्त कहता है कि अीमानदारीसे कामधंधा करनेवाले या मजदूरी करनेवालेको जीवन-निर्वाहका जरूरी साधन मिलना ही चाहिये। समाजमें अैसी व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे कोअी किसीकी मेहनतका अन्यायसे नाजायज फायदा न अुठा सके। समाजकी आर्थिक व्यवस्थामें अेक-दूसरेके शोषणकी गुंजाअिश नहीं होनी चाहिये। आज दुनियामें सबसे बड़ा दुःख अिस आर्थिक शोषणके जालका ही है। अिस जालमें से प्रजाके बहुत बड़े भागको, जो गरीब है, निर्बल है, छुड़ाना चाहिये। सर्वोदयका सिद्धान्त कहता है कि

१. सबके भलेमें हमारा भला है।

२. वकील और नाअी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये, क्योंकि सबको आजीविका कमानेका अेकसा हक है।

३. सादा मजदूरीका, किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।"

ये शब्द मैंने गांधीजीकी आत्मकथामें से यहां दिये हैं। यह बड़ी कठिन चीज है। अिसे मानना मुश्किल है। फिर भी अिसमें शक नहीं कि सच्ची चीज यही है। अलग-अलग काम-धन्धोंसे जो आय हो, अुसमें अूंच-नीचका क्या काम? अुनकी आयमें अितना बड़ा फर्क क्यों होना चाहिये? वकील और डॉक्टरके अेक घंटेके कामके ५०, १०० या अिससे भी ज्यादा रुपये मिलें और मजदूरको अेक घंटेके कामके लिअे ४-६ आने ही क्यों मिलें? अिस सवालका सन्तोषजनक जवाब नहीं मिलता। अिसके पीछे रहनेवाले सामाजिक या आर्थिक विचारोंमें जब तक परिवर्तन न हो, तब तक अिस स्थितिमें सुधार नहीं हो सकता। सर्वोदयका सिद्धान्त अिन विचारोंमें फेरफार करना चाहता है। जिनको खूब मिलता है, जो वर्ग आज मालदार हैं या किसी न किसी कारणसे दुनियादारीमें सफल हो गये हैं, अुनसे यह सिद्धान्त कहता है कि आपको जो आय होती है वह आपके भोग-विलास या अैश-आरामके लिअे नहीं है, वह आपके पास ट्रस्टके रूपमें है। समाज अुसका लाभ अुठा सके, यह देखना आपका धर्म है। दूसरी तरफ, जिन वर्गोंको न्यायसंगत आवश्यक आमद भी नहीं होती, जो गरीब और पिछड़े हुअे हैं, अुनसे सर्वोदयका सिद्धान्त कहता है कि तुम्हारा श्रम भी अेक बहुत बड़ी पूंजी है। अिसके साथ यदि तुम

www.vinoba.in

अपनेमें समझदारी और स्वावलम्बनके गुण बढ़ाओ, तो तुम किसी तरह पीछे नहीं रह सकते। तुम्हारा कल्याण तुम्हारे ही हाथमें है। श्रम ही सृष्टिकी कामधेनु है। समझदारीके साथ अुसका अुपयोग करोगे, तो सामनेवाला तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

अिस प्रकार सर्वोदयका सिद्धान्त समाजके दोनों दलोंको कार्य-क्रम बताता है, धर्म बताता है, आदेश देता है। धनवान, मालदार या बलवान वर्गोंको अुनकी जिम्मेदारी बताता है। अुनसे कहता है कि दान, दया और त्यागकी भावना धारण करो और अपनेको अूंचे या भिन्न वर्गका माननेका अभिमान छोड़ दो। गरीब या निर्बल वर्गोंसे यह सिद्धान्त कहता है कि तुम्हारे श्रमसे तो सारी दुनिया जी रही है; अुस श्रमके साथ ज्ञान और समझदारीके गुण जोड़ लो, तो तुम्हें कोअी चूस नहीं सकेगा, तुम खुद अपना कल्याण कर सकोगे।

लेकिन यहां यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि अिस तरह यदि लोग अपना-अपना धर्म पालें, अपनी जिम्मेदारी समझें, समझदारी बढ़ावें, तो फिर दूसरा चाहिये क्या? वैसा न हो, अथवा धीरे-धीरे हो तो क्या? स्वराजके आनेसे क्या अिसमें फर्क नहीं पड़ना चाहिये? जनताकी सरकारें यदि सर्वोदयकी नीति अख्तियार करें, तो अुन्हें कैसे चलना चाहिये? सर्वोदयका सिद्धान्त सरकारोंसे क्या कहता है?

यह सवाल आज बड़े महत्त्वका बन गया है। जब तक हमारे देशमें विदेशी हुकूमत थी, तब तक यह सवाल अितना आगे नहीं आया था। अब अिसका विचार किया जाना चाहिये। सर्वोदयका सिद्धान्त अैसा कहता है कि सरकार प्रजाकी प्रतिनिधि है, अुसकी ट्रस्टी है। अुसे किसी भी अेक वर्गकी नहीं बनना चाहिये। सब दलोंका, सब वर्गोंका खयाल रखकर काम करना चाहिये। और सब दलोंका मतलब है जो वर्ग अत्यन्त पिछड़े हुअे हैं, कमजोर हैं, अुनका पहले खयाल करना चाहिये। अिसलिअे अिस सिद्धान्तको कुछ लोग 'अन्त्योदय' भी कहते हैं। अेक साथ सभीका पक्ष कैसे लिया जा सकता है? अिसका रास्ता यह है कि जिसकी तरफ पहले ध्यान देनेकी जरूरत हो, अुसका पहला खयाल किया जाय। अिसीलिअे यह सिद्धान्त कहता है कि भारतकी सरकारको गरीबोंके कल्याणके लिअे काम करना चाहिये। अिसका मार्ग यह है कि जहां आर्थिक या सामाजिक अूंच-नीचपन या कंगालियतके कारण प्रजाका शोषण होता हो, वहां सरकारको बीचमें पड़कर कमजोरके रक्षककी तरह अपनी ताकतका अुपयोग करना चाहिये। किसी भी न्यायसंगत वस्तुका नाश न हो सके, अुसी तरह किसी भी न्यायपूर्ण वस्तुकी अवगणना नहीं होनी चाहिये। अिस तरह यदि जनताकी सरकार काम करे, तो ही वह वर्गविग्रहसे या वर्गोदयसे बच सकती है। अैसी सरकार पूरी तरह लोकतंत्रात्मक होनी चाहिये। अैसी सरकार दूसरे किसी देश पर बुरी नीयत नहीं रखेगी, अुस पर अपना साम्राज्य जमानेकी ताकमें नहीं रहेगी। वह दुनियाके किसी भी देशके साथ वैमनस्य नहीं रखेगी, बल्कि अपने देशके न्यायपूर्ण कल्याणके लिअे प्रयत्न करेगी। दुनियाकी सरकारें यदि अिस ढंगसे चलें, तो ही दुनिया युद्धसे बच सकेगी और सब लोग सुखसे रह सकेंगे। सर्वोदयका सिद्धान्त सब देशों, सब जातियों, सब वर्गों, सब मनुष्योंके अुदयका — अुत्कर्षका मार्ग है। अुसकी जड़में समानता और बन्धुताकी भावना रही है, वह मानव-धर्मकी बुनियाद पर रचा हुआ सिद्धान्त है। साध्य और साधनके बीचके ओतप्रोत सम्बन्धको वह कभी भूलने नहीं देता। अैसा करके वह मानवकी मानवताको आगे बढ़ाता है और अुसके बल पर सृष्टिके अेक मानव-कुटुम्बसे हिलमिलकर रहनेको कहता है। आज दुनियामें अनेक वाद चलते हैं। अुनमें सर्वोदयका सिद्धान्त अपना अनोखा स्थान रखता है। अुसका कारण यह है कि अुसमें मनुष्यकी मनुष्यताका अर्थात् अुसके अुत्तम गुणोंका अिन्कार नहीं है, बल्कि वह कहता है कि अुन्हीं गुणोंके बल पर मानव-संसारका काम चलना चाहिये। अिस सिद्धान्तको राजनैतिक क्षेत्रमें व्यावहारिक रूप देनेकी जिम्मेदारी भारतने अपने सिर ली है। क्योंकि हमने सर्वोदयको हिन्द स्वराजका आदर्श बनानेका निर्णय किया है। सर्वोदयके आजके प्रजासत्ताक दिनके मौके पर हम अिस आदर्शको याद करें।

२४-१-'५२ **मगनभाअी देसाअी**

(गुजरातीसे)

## यंत्र-बहिष्कार आन्दोलन

बिहारसे निम्नलिखित सूचना हमारे पास आअी है:

"कअी महीने हुअे बिहार खादी समितिके संचालक मंडलने समितिके प्रमुख सदस्योंकी सहमतिसे अेक प्रस्ताव स्वीकृत कर मिल द्वारा अुत्पादित कपड़े अेवं खाद्य सामग्रियोंके बहिष्कारका प्रचंड आंदोलन कर रखा है। प्रस्तावकी व्याख्यामें साफ कर दिया गया है कि मिल द्वारा अुत्पादित कपड़ेकी जगह खादी और मिल द्वारा अुत्पादित चावल, दाल, आटा, चीनी अेवं तेल तथा वनस्पति घी (जमाये तेल) की जगह क्रमशः हाथ-छटा चावल, हाथचक्कीकी दाल, हाथचक्कीका आटा, गुदामी चीनी या गुड़ अेवं घानी-तेल अथवा विशुद्ध घीका व्यवहार किया जाय।

"अुपर्युक्त बहिष्कार आन्दोलनकी सूचना देशकी सरकारी अेवं गैर-सरकारी सभी संस्थाओंको भेजी गअी है और जनतासे अनुरोध किया गया है कि वह देश अेवं समाजके सर्वविध कल्याणप्रद मार्गमें अविलंब अग्रसर होकर अिस आन्दोलनको सफल बनावे।

"बहिष्कार आन्दोलनके समाचार पाते ही समितिके कार्यकर्ता अेवं कतिपय बाहरी लोगोंके स्वीकार-पत्र अेवं अुनके आचरणसे यह जान पड़ता है कि यह आन्दोलन देशकी जनताको अपनी ओर आकृष्ट करनेमें बहुत सफल होगा।

"अभी हालमें ही भागलपुर जिला बोर्डने अिसके संबंधमें अेक पत्र भेजकर आन्दोलनके साथ सहयोग देनेकी अुदारता जाहिर की है। पत्रसे ज्ञात होता है कि अुक्त बोर्डने अपनी बैठकमें अेक प्रस्ताव रखकर अपने सदस्योंसे अनुरोध किया है कि बिहार खादी समितिके बहिष्कार आन्दोलनकी सफलताको आगे रखते हुअे देशकी भलाअीके खयालसे सारे जिलेमें अिसे कार्यान्वित किया जाय।

"आशा है बिहार राज्यके जिला बोर्ड आदि अन्यान्य संस्थाअें भी भागलपुर जिला बोर्डकी ही तरह हमारे आन्दोलनमें सहयोग प्रदान करके देश तथा समाजके सर्वविध हितमें हाथ बटावेंगी।"

भागलपुरका जिला बोर्ड देहातके लोगोंके लिअे अन्न-वस्त्रके मामलेमें मिल-सामानका बहिष्कार और ग्रामोद्योगी मालका अिस्तेमाल हो, अिसका प्रचार करना चाहता है। यह खुशीकी बात है। वस्तुतः जिला बोर्ड देहाती जनताके कल्याणके लिअे ही बनता है। आज केंद्रीय औद्योगीकरणके कारण देहाती जनता जिस प्रकार शोषित होती जा रही है, अुसे देखते हुअे यह अुचित ही है कि जिला बोर्ड अुनके संरक्षणकी सक्रिय तथा व्यावहारिक योजना बनावे। जब तक देहाती जनता खेतीके साथ-साथ ग्रामोद्योगोंसे अपनी जरूरत पूरी नहीं कर लेगी और यंत्रोद्योगोंका बहिष्कार नहीं करेगी, तब तक अुसका शोषण जारी रहेगा और वह बरबादीकी हालतमें ही पड़ी रहेगी। अतः भागलपुर जिला बोर्डके लोग सही दिशामें जो कदम अुठा रहे हैं, वह भारतके सभी जिला बोर्डोंके लिअे अनुकरणीय है। आशा है वे अिस ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान देंगे।

चरखा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) **धीरेन्द्र मजूमदार**

१७-१-'५२

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२ फरवरी १९५२

# सरकारी वेतनमान और रचनात्मक कार्यकर्ता

अेक निष्ठावान रचनात्मक कार्यकर्ता, जो अभी सरकारी तंत्रमें काम कर रहे हैं, 'हरिजन' के सम्पादकजीको लिखते हैं:

"सरकारी तंत्रमें रचनात्मक काम चलानेके लिअे अपनी संस्थाओंके कुछ सेवक सरकारी नौकरीमें जाते हैं। संस्थामें रहते हुअे वे सादा और सस्ता जीवन बिताते हैं। सरकारी तंत्रमें दाखिल होनेके बाद वे खुदकी और परिवारकी जिम्मेदारी निभानेके लिअे सरकारसे किस हिसाबसे वेतन लें, अिस बारेमें आप मार्गदर्शन दें तो अच्छा हो। सरकारी मानके मुताबिक जो कुछ मिले, सो पूरा स्वीकार कर लें क्या? अथवा अधिकसे अधिक कितना लें, अिसकी मर्यादा बतानी चाहिये। क्या सरकारी तंत्रमें मिलनेवाला विशेष अधिक वेतन लेनेवालेको रचनात्मक कार्यक्षेत्रमें और संस्थाओंमें पहले जैसी ही प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये? हमारे जो सेवक सर्वोदय, नयी तालीम, आदिम जाति सेवा अित्यादि प्रवृत्तियोंके लिअे सरकारी तंत्रमें जाते हैं, अुनका मार्गदर्शन करनेकी खास जरूरत दीखती है। सरकारी नौकरीमें हमारे कार्यकर्ताओंके बड़ा वेतन लेनेसे हमारी संस्थाओंमें काम करनेवाले दूसरे कार्यकर्ताओंमें बड़ा असंतोष पदा होता है। संस्थाओंके सामान्य श्रेणीके सेवकोंकी लगन कमजोर हो जाती है और वे सरकारी नौकरी मिलनेकी राह देखते रहते हैं। पर सरकारी नौकरीमें तो थोड़े ही जा सकेंगे, बहुतोंको हमारी संस्थाओंमें ही काम करना पड़ेगा। मेरी प्रार्थना है कि आप अिस विषय पर 'हरिजन' पत्रमें विस्तारपूर्वक लिखनेकी कृपा करें।"

देश-सेवाकी दृष्टिसे यह विषय महत्त्वका है। संपादकजीने अिस विषय पर लिखनेका मुझे कहा है। यह अुनकी कृपा समझूं या अवकृपा? विषय बहुत नाजुक है। जो कुछ लिखना पड़ेगा, अुससे कुछको बुरा लगना संभव है। पर आशा रखता हूं कि सेवाभावकी दृष्टिसे अिस विषयकी चर्चा होना लाभदायक होगा। पत्रलेखकका प्रश्न रचनात्मक कार्यकर्ताओंके बारेमें है, पर अुसका संबंध सारी सरकारी नौकरीसे आ जाता है। अिसलिअे समूचे सरकारी वेतन-मानका विचार किये बिना अुसके मर्यादित अंशका अुत्तर काफी नहीं होगा।

नमक सत्याग्रह शुरू करनेके पहले गांधीजीने वाअिसरॉयको जो पत्र लिखा था, अुसमें यह बताया था कि भारतवासीकी औसत आय और वाअिसरॉयके वेतन दोनोंमें कितना बड़ा अंतर है और अुसमें हमारे गरीब देशके लिअे कितना अन्याय भरा पड़ा है। यह मानना चाहिये कि अुनका वह निवेदन कांग्रेसके प्रतिनिधिके रूपमें था। आज भारतमें कांग्रेसी सरकारें राज्य कर रही हैं। क्या गांधीजीका अुस समयका वह अुलाहना अंग्रेज शासकोंको ही लागू था और कांग्रेसी शासकोंको लागू नहीं होता? यह सही है कि आज पैसेका मूल्य घट गया है और भारतवासीकी औसत आय और अभीके अुच्चतम वेतनमें अुतना फर्क नहीं रहा जितना कि अुस समय था। पर जितना फर्क है, अुतना भी क्या थोड़ा है? वह करीब ढाअी-तीन सौ गुना बैठता है। अिस विषमताको हमारे विधानमें भी स्थान दे दिया गया है। अुसमें कुछ अुच्च अधिकारियोंके वेतन मुकर्रर कर दिये गये हैं। देशका दारिद्र्य घटे या बढ़े, वे वेतन घटाये नहीं जा सकेंगे अैसा प्रबंध हुआ है। यहां तक व्यवस्था की गअी है, जैसे कि प्रायः सब सरकारी विभागोंमें है, कि अेक अधिकारीको अुसके अूपरके अधिकारीके स्थान पर थोड़े समयके लिअे ही काम करना पड़े, तो भी अुसे अुस समयके लिअे अुस अुच्च पदका वेतन मिल सकेगा।

सरकारी वेतनमानके बारेमें 'हरिजन' में और बाहर भी अनेक बार चर्चा हुअी है, भारतकी पार्लमेन्टमें भी चर्चा हुअी है। पर अब तक अुसके घटनेके कोअी चिन्ह नहीं दीख रहे ह। अभी-अभी दिसंबर '५१ के मध्यमें चुनावके दौरेमें वेतनविषयक आक्षेपका अुत्तर देते हुअे पंडित नेहरूजीका जो भाषण अखबारोंमें छपा है, अुसमें नीचे लिखे मुद्दे सामने आये हैं:

(१) हमारे समाजमें केवल सरकारी कर्मचारी ही नहीं हैं, वरन् अुद्योगपति और वकीली आदि अनेक धंधे करनेवाले लोग भी हैं।

(२) सन् १९३१ में कांग्रेसने अधिकतम वेतन रुपये ५०० माहवार सुझाया था। अब अुसका मूल्य डेढ़-दो हजार मानना चाहिये। मुख्य प्रधानको अिनकम टैक्स काटकर १,९५० रुपये मिलते हैं। कर्मचारियोंके लिअे पब्लिक सर्विस कमीशनने अधिकतम वेतन मासिक रुपये तीन हजार रखा है।

(३) राष्ट्रपतिको बिना अिनकम टैक्सके रुपये पांच हजार मासिक मिलते हैं और कुछ भत्ते। राष्ट्रपति देशकी प्रतिष्ठाका प्रतीक है। यह नहीं कि प्रतिष्ठाके लिअे अूंचा वेतन रहना चाहिये, पर अुनको कअी कार्यक्रम करने पड़ते हैं और दान भी देना पड़ता है। राष्ट्रपतिको अिस तरह रहना चाहिये कि देशके प्रमुखके नाते अुनका दरजा और आदर बढ़ा-चढ़ा रहे। अगर लोग वेतन घटाना चाहें, तो घटा सकते हैं। पर अुससे देशकी आर्थिक दशामें फर्क नहीं होनेवाला है।

पंडितजी हमारे सर्वोपरि हैं। आखिर अुनकी जो राय होगी, वैसा ही होना संभव मानना चाहिये। पर यह जतला देना जरूरी है कि अिस विषयकी दूसरी बाजू भी है और वह बलवान भी है।

पहले मुद्देमें अुद्योगपति और दूसरे धंधेवालोंका अुल्लेख किया गया है। अिसका आशय क्या यह नहीं दीखता है कि जब दूसरे धंधोंमें खासी कमाअी होती है, तो सरकारी कर्मचारी भी कम वेतनमें कैसे टिके रहेंगे? हमें अिस बातको महत्त्व देना होगा कि देश बहुत बड़ा है और अुसके शासनके लिअे बहुत बड़ी संख्यामें अच्छी योग्यतावाले कर्मचारियोंकी सदा जरूरत रहेगी। कुछ हद तक वेतनमान अूंचा रखे बिना अुनके लिअे सरकारी नौकरी आकर्षक नहीं रहेगी। सामान्य कर्मचारियोंके लिअे तो यह ठीक है, पर अगर अुच्च कर्मचारियोंके लिअे भी पैसा ही आकर्षक हो, तो देशकी खैर नहीं समझनी चाहिये। अुनकी तुलना व्यापारी या धन कमानेवालोंसे नहीं की जा सकती। शासन भला बुरा चलाना अुनके हाथ है। वे पब्लिक सर्वन्ट्स कहलाते हैं। अैसी स्थिति रहना योग्य नहीं कि वे अपने स्वार्थके लिअे ही सरकारी नौकरीमें आवें। अुनमें सेवाभाव होना अत्यन्त जरूरी है। मनुष्यकी महत्त्वाकांक्षाके लिअे अवसर जरूर चाहिये, पर वह आकांक्षा पैसेकी हो अिसमें मनुष्यकी महानता नहीं है। अिसके अलावा, राज चलानेका जो अधिकार मिलता है, अुसमें भी आकांक्षाकी पूर्ति कम नहीं है। दूसरे पैसे कमानेवालों और राज्य-कर्मचारियोंमें यह अेक बड़ा फर्क है।

सरकारी अधिकारियोंके वेतनमानमें अेक बड़ा दोष यह दीखता है कि अूंचे पदके साथ वेतन बढ़ता ही चला जाता है। वास्तवमें अुच्च कर्मचारियोंकी आवश्यकताओंमें कोअी बड़ा फर्क नहीं रहता। फिर केवल पद अूंचा होनेके कारण वेतन अधिक देनेका कोअी कारण नहीं दीखता। विशेष जिम्मेदारीके कारण अधिक वेतन देना योग्य

www.vinoba.in

समझा जाय, तो व्यक्तिमें जो शक्ति है अुतना ही तो वह काम कर सकता है; और हरअेक कर्मचारीसे अपेक्षा रखी जाती है कि वह अपनी शक्तिभर काम करे। बुद्धिमत्ताके कारण वेतन अधिक देना पड़ता है अैसा कहें, तो अुच्चपद केवल बुद्धिके कारण नहीं दिया जाता। अुसमें ज्येष्ठता ('सीनियारिटी') का बहुत कुछ हाथ रहता है। अधिकार-पद और अधिकार-क्षेत्र बढ़ना ही गुण आदिका काफी मुआवजा समझना चाहिये। अुन पर यह भी जिम्मेदारी है कि वे अपने त्याग और सेवाभावसे अपनेसे नीचेके दरजे पर काम करनेवालोंको देशसेवाकी प्रेरणा देते रहें। देशकी दरिद्री अवस्थाका खयाल करके भी अुच्च अधिकारियोंका वेतन मर्यादित रहना ही वाजिब दीखता है।

सरकारी कर्मचारियोंका वेतनमान अूंचा रहनेके कुछ कारण हो सकते हैं। परंतु हमारे राज्यपाल, मंत्री तथा धारासभाओंके सदस्य अेवं पदाधिकारी — अिनकी श्रेणी तो निराली ही है। वे जनताके प्रतिनिधि हैं, जनताकी सेवा करनेके लिअे ही अुन स्थानों पर जाते हैं, और वे जनताका नेतृत्व करते हैं। अुनका रहन-सहन बढ़ा-चढ़ा क्यों रहना चाहिये? अूपरके मुद्दोंमें प्रतिष्ठाकी बात आयी है। अूंचा वेतनमान रखनेमें यह भी अेक बड़ा कारण दीखता है। प्रतिष्ठा और आदर्श शानसे रहनेमें समझना चाहिये या सादेपनमें, यह अेक प्रश्न है। अंग्रेजोंने अपने स्वार्थके साथ यहांकी प्रजा पर रोब जमानेके लिअे ठाट-बाटका रहन-सहन रखा। पर क्या आजके लोकतंत्रमें और हिन्दुस्तानकी संस्कृतिके अनुसार अिसकी आवश्यकता है? हमारे यहां राजाओंकी अपेक्षा ऋषि-मुनियोंका आदर सदा अधिक रहा है। आज भी जो राजा या श्रीमान लोग सादगीसे रहते हैं, अुनकी प्रशंसा ही होती है। यह शान और प्रतिष्ठाकी गलत कल्पना भारत जैसे गरीब देशको कैसे फब सकती है?

आजके कअी मंत्री लोग मंत्री होनेके पहले साधारण आर्थिक स्थितिवाले थे, सादा जीवन बिताते थे। पैदल चलनेमें और रेलमें तीसरे दर्जेका प्रवास करनेमें कोअी बाधा नहीं समझते थे। मंत्री होते ही अुनके रहन-सहनमें अितना फर्क क्यों हो जाना चाहिये? बहुतोंने स्वराज्यकी लड़ाअीमें बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस वर्ष त्याग किया। कअी वर्ष जेलमें रहे, कमाअी नहीं कर सके। अब बड़े वेतन बिना नहीं निभ सकता, अैसी सबकी परिस्थिति कैसे खड़ी हो गयी? क्या अुस समय त्याग करनेकी जरूरत थी और अब नहीं है? राज्यतंत्रमें, देशमें और कांग्रेसमें जो भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, अुसको हटानेके लिअे हमारे नेता चिंतित हैं। शुद्धिके लिअे कुछ प्रयत्न भी हो रहा है। क्या यह शुद्धि देशको त्यागकी सीढ़ी पर, या यह कहूं कि त्यागकी शूली पर चढ़ाये बिना संभव है? लोग जिनको नेता या बड़ा मानते हैं, क्या अुनके द्वारा त्यागके अुदाहरण पेश हुअे बिना बहुजन समाजमें शुद्धि आना संभव है? राज्यपाल, मंत्री आदि तथा सरकारके अुच्च पदाधिकारी जनताकी दृष्टिमें श्रेष्ठ माने जाते हैं। देशहितके लिअे आवश्यक है कि ये लोग त्यागपूर्वक अपना आराम कम करके सादा जीवन बितावें और कम वेतनसे निभावें।

अूपरके दो मुद्दोंमें कहा गया है कि वेतन घटाना चाहें तो घटा सकते हैं, पर अुससे देशकी आर्थिक दशामें फर्क नहीं होने वाला है। यह बहुत कुछ हद तक ठीक है, पर अिसमें खर्चकी बचतका सवाल गौण है। प्रश्न यह है कि देशकी दरिद्रावस्थासे मेल कैसे बैठ सकता है? लोग बड़ोंका अनुकरण करते हैं। अगर बड़े लोग अधिक वेतनमें बड़प्पन मानते हैं, तो दूसरोंकी भी अिच्छा अधिकाधिक धन कमानेकी होना स्वाभाविक है। शुद्धिके लिअे लोगोंकी भावना जाग्रत करनेकी जरूरत है। बड़ोंका व्यवहार जनताको शुभ प्रेरणा देनेवाला होना चाहिये।

बहसके लिअे मान लें कि राज्यतंत्र चलानेके लिअे अभी मुकर्रर किया हुआ वेतनमान ठीक है, तथापि अेक महत्त्वका प्रश्न बाकी रह जाता है। सरकारका वेतनमान कुछ भी हो, अगर हमें अुतने अधिक वेतनकी या कुछ भी वेतन लेनेकी आवश्यकता न हो, तो हम अुतना वेतन क्यों लेवें? क्या अूपर लिखे लोगोंमें अैसे व्यक्ति नहीं हैं, जिनके पास निजकी खासी जायदाद है, जिससे अच्छी आमदनी हो जाती है, जिनके लड़के, भाअी आदि काफी कमा लेते हैं, अथवा हमारी संस्कृतिकी भाषाका अुपयोग करें, तो जो वानप्रस्थ आश्रमके लायक हो गये हैं? सरकार देनेको तैयार हो, तो भी अुनको पूरा या कुछ भी वेतन क्यों लेना चाहिये? जनताका योग्य मार्गदर्शन करनेके लिअे वे अितना-सा भी त्याग नहीं कर सकते? अैसे अिने-गिने व्यक्ति जरूर हैं, जो मुकर्ररसे कम वेतन लेकर अपना काम चला रहे हैं। पर अुनकी संख्या अितनी नगण्य है कि जनता और पदाधिकारियों पर अुनका प्रभाव नहीं पड़ता। शायद अुनका यह व्यवहार प्रगट नहीं होने दिया जाता है। कुछ अैसा भी दीखता है कि कुछ सज्जन कम वेतन लेनेकी अिच्छा रखते हैं, पर दूसरे पदाधिकारी अुनको अिसके लिअे दोष देंगे, अिस भयसे वे वैसा करनेका साहस नहीं करते। अर्थात् अैसे व्यक्ति भी अिने-गिने ही हैं। यह सरकारी नौकरीके वातावरणका दोष है। अैसी अवस्था होनी चाहिये कि जिनको जरूरत हो वे पूरा वेतन ले लें और जिनको जरूरत न हो वे कम लें या कुछ भी न लें। कोअी किसीको दोष न दे।

अूपरके विवेचनसे पत्रलेखकके प्रश्नोंका अुत्तर मिल जाना चाहिये। पू० विनोबाजीने कहा है कि राज्यका काम ठीक चलनेके लिअे अेक अधिकारी पक्ष रहेगा, जो लोगोंकी ओरसे बहुसंख्याके आधार पर राजकाजकी जिम्मेदारी अुठावेगा और दूसरा विरोधी, जो अुसके कार्योंमें प्रतिसहकार करेगा। अिन दो पक्षोंके अलावा अेक तीसरी निष्पक्ष जमात होनी चाहिये, जो सेवा-काममें लगी रहेगी। यह जमात जितनी विशाल और शक्तिशाली होगी, राज्यतंत्र और लोकतंत्र दोनों अुतने ही शुद्ध और मर्यादामें रहेंगे। पाठक सोचेंगे तो पायेंगे कि यह तीसरी जमात रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी ही हो सकती है। यों तो जो कुछ देशकी भलाअीके काम किये जाते हैं, वे सब रचनात्मक हैं। पर रचनात्मक शब्दका प्रयोग बहुत करके अहिंसा अेवं गांधीजीकी विचारधाराके अनुसार किये जानेवाले कामके लिअे होता है। अैसे रचनात्मक कार्यकर्ताओंके जीवनमें अन्य गुणोंके साथ अपरिग्रहका विशेष स्थान रहना चाहिये। सर्वोदयी समाजमें आर्थिक समताको महत्त्वका स्थान है। अिस दशामें वे अधिक वेतनके मोहमें पड़ सकते हैं? सरकारके द्वारा कुछ भी वेतनमान मुकर्रर किया गया हो, तथापि अुनको तो अपनी आवश्यकताके अनुसार ही वेतन लेना चाहिये। पत्रलेखकने यह भी पूछा है कि अधिकसे अधिक क्या वेतन लेवें, अिसकी मर्यादा बताअी जाय। यह मर्यादा बांधना मुश्किल है। क्योंकि हरअेककी परिस्थिति भिन्न-भिन्न होती है। अिस विषयका निर्णय कार्यकर्ताको अपने हृदयकी प्रेरणासे ही करना होगा। अगर वह जरूरतसे ज्यादा वेतन लेनेका निर्णय करे, तो वह रचनात्मक कार्यकर्ताके नाते दोषका भागी होगा। सरकारी तंत्रमें चले जानेके कारण अुसको अपने रहन-सहनकी या आयकी मर्यादा बढ़ाना वाजिब नहीं होगा। अुलटे अुसको अपना सादापन कायम रखकर सेवाभावी कार्यकर्ता कैसा हो, अिसका अुदाहरण पेश करना चाहिये। केवल वेतनकी ही बात नहीं है, प्रवास-भत्ता, छुट्टियां आदिमें भी अुसकी विशेषता होनी चाहिये। अिन बातोंके सरकारी पैमाने बहुत अुदार हैं। रचनात्मक कार्यकर्ताको अपने मामूली रहन-सहनके मुताबिक प्रवास आदिमें जितना खर्च हो, अुतना ही सरकारसे लेना चाहिये। धारासभाओंके कुछ सदस्य प्रवास आदिमें कम खर्च करके भत्तेमें बचत कर लेते हैं, यह कोअी अनुकरण करने लायक बात नहीं है। सरकारी तिजोरीमें जो पैसा आता है, वह अन्तमें गरीबोंके पाससे ही वहां पहुंचता

www.vinoba.in

हैं। हम अपना पैसा खर्च करनेमें जो किफायत करते हैं, अुतनी ही किफायत सरकारी पैसेके खर्चमें भी होनी चाहिये।

यह सब कहनेके बाद अेक अिशारा कर देना जरूरी है। जो सादगी और अपरिग्रहसे रह सकते हैं, वे अुनकी तरफ अवहेलनाकी दृष्टिसे न देखें, जो निर्बल हैं और आरामसे रहने या पैसा कमानेका लालच नहीं छोड़ सकते। अिसलिअे रचनात्मक क्षेत्र या संस्थाओंमें अुन्हें कितनी प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये, यह सवाल प्रस्तुत नहीं। अपरिग्रह और सादगीके सद्‌गुणोंकी सारी कीमत चली जाती है, यदि वे अभिमान और अीर्षासे दूषित हो जायं।

सेवाग्राम, वर्धा,
२५-१२-'५१

श्रीकृष्णदास जाजू

# विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

## १५

## बारहवां मुकाम

[ता० २६-४-'५१: तुरपल्ली (नलगुंडा): १२ मील]

प्राणीमात्रके लिअे सबके हृदयमें दयाभाव जाग्रत करनेकी प्रभुसे प्रार्थना करके विनोबाने नित्यकी भांति सबेरे पांच बजे कूच किया। थोड़ी ही देरमें डढ़ मीलवाले अिर्वेन नामक गांवमें पहुंचे। साढ़े पांच भी नहीं बजे होंगे। सारा गांव अुमड़ पड़ा था। विनोबा रास्तेमें कहीं रुकते नहीं, परंतु अब तो 'भिक्षा' के लिअे कहीं भी रुक सकते थे। अनंत रेड्डीने पन्द्रह अेकड़ अच्छी जमीनका दान-पत्र पेश किया। अुस प्रभातकी मंगलवेलामें वह दान-पत्र स्वीकार करते हुअे विनोबाने गांववालोंको गांवमें प्रेम-भाव बनाये रखनेके लिअे कहा। अेक बात खयालमें रखनी चाहिये कि हम अब महबूब नगर जिला पार कर चुके थे और पुनः नलगुंडा जिलेमें प्रवेश कर चुके थे। सबने यहां बड़ी राहत पाअी, सुखकी सांस ली। जब गांवके समीप आये, तो रामधुनसे वातावरण गूंज अुठा — "रामजी आये" का गीत गाया जा रहा था। जब भूदान लेकर विनोबा चल पड़े — और वे तेजीसे ही चलते हैं — तो गांववाले भी अुनके साथ हो लिये और अुतनी ही तेजीसे गाने लगे। अबकी बार भजनमें परिवर्तन हुआ: "मन रामडू पोतुन्नाडु रामं भजे — रामजी रवाना हो रहे हैं, आओ मन! रामका भजन करें।"

### 'बाल'-कृष्णके पीछे जसोदा!

रास्तेमें कोतापल्ली और सिदमपल्ली पर लोगोंके प्यार भरे स्वागतका स्वीकार करते हुअे करीब दस बजे तुरपल्ली पहुंचे। अेक मीलकी दूरी पर कअी लोग भजन-मंडलीके साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। गांव नजदीक आया, तो दर्शनोत्सुक गांवके नर-नारी प्रतीक्षा करते दिखाअी दिये। रामध्वनियोंसे अुन्होंने विनोबाका हार्दिक स्वागत किया। गांवमें प्रवेश करानेवाले रास्तेके दोनों ओर केतकीकी बाड़ अपना पूरा वैभव प्रगट करती दिखायी दे रही थी। बीचमें केतकी-कमल छः-छः आठ-आठ फुट अूंचे अैसे फबते थे, मानो वे किसी प्रसंगके लिअे सजधजके साथ रचे गये हों। अुन्हें देखकर लगता था, जैसे पड़ावका स्थान यही हो। मोगरा, कनेर और गुलाबके दरजनों हारोंकी वर्षा हुअी। विनोबाने सबका प्रेमपूर्वक स्वीकार किया और अुसी क्षण साथ चलनेवाली बालकृष्णकी मूर्तियोंको अपने हाथोंसे मालायें पहना दीं। विनोबाकी कसौटी करनेके लिअे ही मानो कभी-कभी कोअी बालक कुछ असमंजस-सा, कुछ भयभीत-सा दौड़ने लगता है। विनोबा भी अपने भगवानके पीछे-पीछे दौड़ते हैं और अुसको मना लाते हैं। फिर बड़े प्यारसे अुसे माला पहना देते हैं।

### गोकुलकी वह याद!

आज तो विनोबा विशेष प्रसन्न थे। तीन बजेसे प्रार्थनाके समय तक मुलाकातों व शिकायतोंका समय रहता है। गांवमें पटेल, देशमुखों या देशपांडोंके खिलाफ कोअी शिकायतें नहीं थीं। जमीनें प्रायः सबके पास हैं, जिन थोड़े हरिजन परिवारोंके पास नहीं थीं, अुनके लिअे स्थानिक लोगोंने पैंतीस अेकड़के करीब जमीन दे दी थी। अिसलिअे कुछ फुरसत पाकर विनोबा कमरेसे बाहर निकले — बाहर तो बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष जमा थे ही। भीड़में बच्चे अुनके साथ हो गये और वे बच्चोंके साथ। पहले थोड़ी देर तो हाथ पकड़कर बच्चे अिधरसे अुधर, अुधरसे अिधर, आंगनमें घूमते रहे। लेकिन वह शृंखला बढ़ती गअी, रास्तेमें समाना संभव नहीं हुआ। अिधर लोगोंकी भीड़ भी बढ़ती गयी। विनोबाने अब बाल-गोपाल मंडलीके साथ नाना तरहके खेल खेलना शुरू किया। जमुनाके किनारे ग्वालबालोंके साथ कैसे खेल खेले जाते होंगे, अिस विचारधारामें मेरा मन डूब गया। सहसा सजल नयनोंको देख मन ही मनमें सजग हुआ, तो सामने मानो ब्रह्मानंद ही सगुण हो रहा था।

प्रार्थनाका समय हुआ। हजारों स्त्री-पुरुषोंको अुस गोकुलमें देखकर विनोबाका मन भी प्रसन्न हो अुठा। अुन्होंने कहा:

### जहां विषमता वहां दान ज्यादा

"मैंने सुना कि यहां बहुतसे लोगोंके पास जमीन है, थोड़े हरिजन ही बचे हैं, जिनके पास जमीन नहीं है। अेक सौ अेकड़से ज्यादा जमीन बहुत थोड़े लोगोंके पास है। बहुत ही थोड़े लोग अैसे हैं, जिनकी पचास सौ अेकड़ जमीन है। यह बहुत खुशीकी बात है कि यहां अैसी स्थिति है। अिसलिअे हमको दान भी कम मिला। बहुत ज्यादा दान मिलता है, तो अुसकी हमें खुशी नहीं होती। क्योंकि जहां ज्यादा दान मिलता है, वहां पहलेसे ज्यादा अन्याय होता था। पहले बहुत विषमता थी, तो कुछ दान हमको वहां ज्यादा मिल गया। किसी मनुष्यके पास बहुत ज्यादा जमीन होना, यह अच्छी बात नहीं है। मनुष्यको आखिर जमीन कितनी चाहिये? हमको संतोंने समझाया है कि साढ़े तीन हाथ जमीन चाहिये।

### वासनाका भूत

"कल अेक भाअीसे बात हो रही थी। हमने पूछा: 'तुम्हारे पास कितनी जमीन है?' तो वह बोले: 'पांच सौ अेकड़।' तो मैंने कहा: 'पांच सौ अेकड़ बहुत ज्यादा जमीन है आपके पास।' अुन्होंने कहा कि हम चार भाअी हैं और हरअेकको चार-चार, पांच-पांच लड़के हैं। कुल मिलाकर बीस हो जाते हैं। तो हरअेकके लिअे २५-२५ अेकड़ हो गअी। मैंने अुनसे कहा कि गरीब मनुष्योंको भी अिसी तरह ४-४, ५-५ लड़के तो होते ही हैं। तो अुस मनुष्यको ५०० अेकड़ जमीन भी ज्यादा नहीं मालूम होती थी। मनुष्यकी वासना अितनी लंबी-चौड़ी होती है, तो अुसका कोअी अंत नहीं आता। आखिर मनुष्य मर जाता है, लेकिन अुसकी वासना जिन्दा रहती है। फिर वह मनुष्य भूत बनता है और दुनियामें घूमता है। अिस तरह वासना मनुष्यको जर्जर करती है, अुसको मारती है, लेकिन छोड़ती नहीं। जो मनुष्य खूब विचारसे वासनाको छोड़ता है, अुसकी ही वासना छटती है।

### छोटीसी युक्ति

"जो बहुतसे लड़के आज यहां आये थे, हमने सोचा कि अुनके साथ जरा खेल लें। फिर १०-१५ मिनट सब लड़कोंके साथ खूब खेल लिया। खेलते-खेलते मेरे मनमें विचार आया कि अितने सारे जो लड़के हैं, अुनकी जिम्मेदारी सिर्फ अुनके मां-बाप पर ही है कि सारे गांववालों पर है? अेक श्रीमान्‌के घरमें कोअी लड़का पैदा हुआ और गरीबके घरमें लड़का पैदा हुआ, तो अुन दो लड़कोंमें क्या फर्क है? लड़का पैदा हुआ वह भगवानका प्रकाश है। और दोनों घरोंमें समान प्रकाश आ गया। अिसलिअे गांवके माता-पिता अगर यह विचार करें कि जितने लड़के गांवमें हैं, सब हमारे हैं, तो गांव सुधर जाता है। यह अेक छोटी-सी युक्ति मैंने बतायी, जिसका अभ्यास करना चाहिये।

www.vinoba.in

"अेक श्रीमान् तो अपने लड़केको पढ़ाअीके लिअे शहरमें भेजता है। अगर वहां कोअी रिश्तेदार है तो ठीक, नहीं तो वहां खुद जाकर रहेगा बच्चेकी तालीमके लिअे। लेकिन सोचना चाहिये कि अपने बच्चेकी तालीमके लिअे अितनी फिक्र करता है, तो अुस गांवके जो दूसरे लड़के हैं, अुनकी तालीमके लिअे क्यों नहीं फिक्र करे? अरे, अेक दीपक अगर जल गया, तो वह घरवालोंको भी काम देता है और बरामदे पर भी काम देता है। अगर अेक स्कूल यहीं गांवमें बनाते हैं और दो-तीन शिक्षक रखते हैं, तो वे दो-तीन शिक्षक मिलकर अुस श्रीमान् लड़केको तालीम देंगे और गांवके लड़कोंको भी तालीम देंगे। भगवान श्रीकृष्ण बाल-गोपालोंमें रहे और अुन्हींके बीच खेले-कूदे। कितना अच्छा था! अगर अैसा होता कि कृष्ण भगवानको गोकुलसे अुठाकर कहीं स्कूलमें दिल्ली भेज देते, तो क्या हालत होती गोकुल की?

### सबका सुख-दुःख साथ-साथ

"बच्चोंके लिअे कोअी जाति नहीं होती। अुनके लिअे गरीब, श्रीमान् भेद-भाव भी नहीं होते। वे तो परमेश्वरकी प्रजा हैं। लेकिन ये श्रीमान् लोग सारे गांवके लिअे नहीं सोचते, अपने खुदके लिअे सोचते हैं। फिर अुनका लड़का शहरमें सीखनेके लिअे जाता है, अुसको गांवसे नफरत पैदा होती है। फिर वह गांवमें रहनेके लिअे भी नहीं आता। बाप तो बचपनसे गांवमें रहा, लेकिन अुसका लड़का बचपनसे शहरमें सीखा। अिस तरह वह पढ़ा-लिखा बनता है, तो गांवको छोड़कर शहरमें भाग जाता है। फिर अुसकी गांवके लोगोंके साथ मैत्री नहीं हो सकती। वह लड़का गांवमें कुछ काम नहीं करता और फसलके समय आता है। अैसी हालतमें अुसको फसल भी ठीक नहीं मिलती; क्योंकि वह गांवमें रहता नहीं, देखभाल करता नहीं। फिर अुसके और गांववालोंके बीचमें वैर-भाव पैदा होता है। तो फिर अुसको डर लगता है और अपने बचावके लिअे वह पुलिसको अपने पास बुलाता है। कहता है कि ये सारे गरीब लोग कम्युनिस्टोंसे मिल गये हैं। हमको बहुत डर है। अब पुलिस तो कोअी स्नेह-भावसे काम करना जानती नहीं। पुलिसके पास क्या ताकत है? अुनका वह डंडा अुनकी ताकत है। तो अिस तरह जहां गांवमें मामला चला कि क्लेश और द्वेष बढ़ता जाता है। अिसलिअे गांवको अगर सुखी करना है, तो यह निश्चय कर लो कि अपने बच्चोंको गांवमें ही तालीम दोगे और सब बच्चोंको अिकट्ठी तालीम दोगे।

### गोकुलका समष्टि जीवन

"अिस तरह सारे गांवके लड़के अेक साथ खेले-कूदेंगे, तो आगे जाकर अपनी जमीनें भी सब मिलकर ही जोतेंगे। फिर वे श्रीमान्के लड़के गरीब लड़कोंसे डरेंगे नहीं। जैसे श्रीकृष्ण भगवान अपने घरका मक्खन सबको खिलाते थे, अुसी तरह वे लड़के अपने घरकी चीज सबको खिलायेंगे। अिसका नाम है गोकुल। गोकुलका अर्थ है, जो मक्खन हो, शक्कर हो, गन्ना हो सब मिलकर खायें। चोरकी तरह घरके अन्दर बैठकर, छिपकर मीठी-मीठी चीजें खाना गोकुल नहीं है। सबके साथ अगर खायेगा तो कितना प्रेम पैदा होगा, और कितना अच्छा लगेगा खानेवालोंको भी। लेकिन वह खानेके लिअे चुप-से बैठता है, तो अुसके खानेमें हिस्सा लेनेके लिअे मक्खियां आती हैं। अब वह मक्खियों पर तो प्रेम नहीं कर सकता। अिस तरह अुसके प्रेमकी भावना अतृप्त रहती है। फिर वह अपने घरमें बिल्ली रखेगा, कुत्ता रखेगा और कुत्ते-बिल्लीको खिलायेगा, अुन्हें दूध पिलायेगा। अिस तरह वह कुत्ते-बिल्ली पर प्रेम कर सकता है, लेकिन अपने गांवके लोगोंसे डरता है। तो यह सारी समस्या तब हल होगी, जब सब मिलकर प्रेमसे अिकट्ठे पढ़ना, लिखना और अभ्यास करना स्कूलमें शुरू कर देंगे।

### शालाका स्वरूप

"और स्कूल भी कैसी होनी चाहिये? जिसमें काम करना पड़ता है और काम करते-करते तालीम मिलती है, अैसी स्कूल होनी चाहिये। आजकल ये श्रीमान्, ब्राह्मणके लड़के स्कूलमें पढ़ते हैं, तो अुनको काम करनेकी आदत ही नहीं रहती। तो गांधीजीने कहा कि हम अैसी स्कूल बनायेंगे, जिसमें हल चलाना होगा, कातना होगा, बुनना होगा, बढ़अी-काम करना होगा। सब तरहके काम बच्चोंको देंगे और अुन कामोंके साथ-साथ शिक्षण देंगे। फिर तो ब्राह्मण बच्चे, हरिजन बच्चे, श्रीमानोंके बच्चे, गरीबोंके बच्चे सब साथ-साथ काम करेंगे, साथ-साथ तालीम पायेंगे। अिसलिअे जब कभी मैं यह सोचता हूं कि ये सारी समस्यायें, सारे दुःख क्या हैं, और कैसे दूर हो सकते हैं, तो मुझे सूझता है कि नयी तालीम गांवमें शुरू करनी चाहिये। जैसे बच्चोंको, वैसे ही बड़ोंको भी तालीम मिलनी चाहिये। बच्चोंको तालीम स्कूलमें मिलेगी, बड़ोंको *तालीम जीवनमें मिलेगी।*

### शादी यानी कुआं

आपके गांवके बड़ोंके लिअे मैं अेक सबक देना चाहता हूं। मैंने सुना कि आज आपके गांवमें शादी हुअी। मैंने पूछा कि हर साल कितनी शादियां होती हैं, तो मुझे बताया गया कि करीब १५-२० शादियां हर साल होती हैं। तो मैंने पूछा कि शादीमें वरकी तरफसे वधूको कुछ देते हैं या नहीं, तो बताया कि देते हैं। कोअी पांच सौ रुपये देते हैं, कोअी हजार। अपनी-अपनी ताकतके मुताबिक देते हैं। तो मैंने कहा कि मैं आपको किस तरह शादी करना अुसका सबक देता हूं। मेरा कहना यह है कि जहां शादी होती है, वहां वरकी तरफसे पैसे नहीं दिये जायं, बल्कि खेतमें कुआं खुदवा दिया जाय। अगर वरके पास कोअी खेती नहीं है, तो कमसे कम अेक अेकड़ खेत दे दिया जाय और अुसमें कुआं खुदवा दिया जाय। हिन्दुस्तानमें ३६ करोड़ लोग रहते हैं और यहांका जीवन कोअी ४०-५० सालका है। तो ४०-४५ सालके अंदर १८ करोड़ शादियां होंगी। और शादीमें कुआं खुदवा देना यह सिलसिला रहा, तो ४० सालके अंदर १८ करोड़ कुअें बन जायेंगे। फिर देखिये, खेतमें अगर कुआं बन गया तो हिन्दुस्तानमें जिधर देखो अुधर तरी ही तरी नजर आयगी। अपने पास जमीन ज्यादा नहीं है। हिन्दुस्तानमें जमीन कम है, लेकिन जमीनके नीचे जो पानी बहता है, वह बड़ा भारी धन है। वह तो सरस्वती नदी है। सरस्वती गुप्त होती है। आपके हैदराबादमें कृष्णा और गोदावरी है। और हिन्दुस्तानमें अिधर कावेरी, अुधर नर्मदा है, गंगा और यमुना है। अिन नदियोंका बहुत अुपकार है। लेकिन अिन नदियोंसे भी ज्यादा अुपकार सरस्वती नदीका होगा। भगीरथ महाराज स्वर्गसे गंगा ले आये। मैं कहता हूं कि आप भी भगीरथ प्रयत्न करें और पातालसे सरस्वतीको बाहर लायें। तो मैं हमेशा हरअेकको समझाता हूं कि शादी यानी कुआं। अगर अिस तरह कुआं बनेगा, तो मजदूरोंको काम मिलेगा और कायमके लिअे पानी आयेगा। अिसके लिअे सरकारसे मददकी कोअी जरूरत नहीं। आपकी शादीके लिअे सरकारकी क्या जरूरत है? अिसलिअे कुआं खोदना शादीका अेक हिस्सा समझो। जब तक कुआं खोदनेकी तैयारी नहीं हुअी और अुतना पैसा भी अिकट्ठा नहीं हुआ, *तब तक शादी करना ही नहीं। अगर कुआं बनानेके* बाद भी वर महाराज खेती नहीं करेंगे, तो गांवके लोगोंका नसीब ही खुल गया। वह नहीं करेगा, तो गांवके दूसरे लोग करेंगे। तो आप लोगोंने अगर यह बात समझी तो अुस पर अमल करें। और जहां-जहां शादी हो, वहां-वहां कुआं जरूर खुदवायें। अगर कुआं हो गया तो गायोंके लिअे चारा मिलेगा और दूध बढ़ेगा। अगर कभी बारिश नहीं हुअी तो भी कुअेंका पानी दे सकेंगे और खेती अच्छी रहेगी।

महाभारतमें अेक कहानी है, वह कहता हूं। अेक दफा धर्मराजा सभामें बैठे थे। नारद मुनि आ गये तो धर्मराजाने अुठकर अुनको प्रणाम किया। फिर नारद मुनिने अुनसे कुशल प्रश्न पूछे। अुसमें

www.vinoba.in

अेक बहुत कामका प्रश्न पूछ लिया। वह प्रश्न आपके अुपयोगका है। तो प्रश्न यह पूछा, 'न कृषिः देवमातृका' — अरे, तुम्हारे राज्यमें जो खेती है, वह सिर्फ आकाश पर ही आधार तो नहीं रखती? 'देव-मातृका पृथ्वी' यानी आकाश पर आधार रखनेवाली कृषि। अैसी अगर खेती रही, तो आपका राज्य खतरेमें है। पातालमें भी आपका धन पड़ा है, वह धन बाहर निकालो।

**पत्थरोंकी कीमतकी कहानी**

लेकिन बेवकूफ पातालमें खोदते हैं और वहांसे हीरे, मोती और पत्थर लाते हैं। कहते हैं कि यह पीला पत्थर है, यह नीला और लाल पत्थर है। क्या अिन पत्थरोंको चबाना है, या पीना है; तो कहते हैं ये देखनेमें खूबसूरत हैं। अगर खूबसूरत हैं तो बच्चोंको खेलनेके लिअे दे दो। तो कहते हैं कि ये बड़े कीमती हैं। खेलनेके लिअे नहीं दे सकते। अुस छोटेसे पत्थरकी कीमत अेक लाख रुपया कहते हैं। अेक लाख रुपयेमें चार लाख सेर धान मिलता है, तो अितने धानकी कीमत अुस छोटे पत्थरके बराबर है। यह कीमत कैसे तय हुअी? यह कीमत मूर्खोंने तय की है! अुसकी भी अेक कहानी है। क्या हुआ कि अेक दफा खोदते-खोदते अेक हीरा निकला और वह किसानके हाथमें आ गया। अुसने सोचा कि अिसका क्या अुपयोग हो सकता है? तो अुसने अपने बच्चेको खेलनेके लिअे दे दिया। अुस बच्चेके साथ दूसरा श्रीमान्का बच्चा भी खेलता था। अुस लड़केने अिस बच्चेका हीरा देखा। वह रोने लगा और अम्माके पास जाकर 'हमको भी हीरा दो' अैसा अुसने हठ किया। तो फिर मां ने बापसे कहा, 'बच्चा रोता है, अुसको हीरा दो।' तो बाप बोला, 'हम श्रीमान् लोग कभी कुदाली लेते नहीं, जमीन खोदते नहीं, हीरा कहांसे आयगा। हीरे तो किसानोंको मिल सकते हैं। क्योंकि वे जमीन खोदते हैं।' तो फिर मां ने कहा कि बच्चा रोता है, तुम अुस किसानके बच्चेको समझाओ और वह हीरा अिसको दिलवाओ। वह श्रीमान् मनुष्य किसानके पास गया और कहने लगा कि तेरे बच्चेके पास जो हीरा है वह हमें दे दे। किसानने अपने बच्चेको बुलाया और कहा कि अिनका बच्चा हीरा मांगता है, अिन्हें वह हीरा दे दो। अुसने कहा कि मुझे यह बहुत अच्छा लगता है, मैं नहीं दूंगा। फिर श्रीमान्ने किसानसे कहा कि अगर यह हीरा मुझे देते हो, तो अुसके बदलेमें ५०० रुपये दूंगा। तो अुसने आखिर कबूल किया। बच्चा तो रोता था, अुसको मिठाअी खिलायी, और वह हीरा दे दिया पांच सौ रुपयेमें। अिस तरह अुस पत्थरकी कीमत जो बच्चेके खेलनेके जितनी थी, वह अब पांच सौ बन गयी। फिर मजा यह हुआ कि वह श्रीमान्का लड़का हीरा अपने पास रखने लगा। बाद अुसको स्कूलमें भेजा गया बड़े शहरमें। वहां पर अेक राजाका लड़का भी स्कूलमें पढ़ता था अुसके साथ। अब वह राजपुत्र वह हीरा अपने बापके पास मांगने लगा। राजाने बेटेको समझाया कि वह हीरा फलाने श्रीमान्का है। अुसको हम कैसे पा सकते हैं? बेटेने कहा, जो चाहे करो; परंतु वह ला दो। अुस श्रीमान्के पास राजा हीरा मांगने लगे। कहने लगे कि यह हीरा मेरे बच्चेको चाहिये, दे दो। वह कहने लगा कि अिससे हमारा बच्चा दुःखी होगा, हम कैसे दे सकते हैं? तो राजाने कहा, 'आप क्या चाहते हो, आप जितनी भी रकम मांगो, हम दे देंगे।' तो अुसने कहा, 'दस लाख रुपये दे सकते हो?' तो राजाने अुस हीरेकी दस लाख रुपये कीमत दे दी और हीरा ले लिया। अिस तरह अिन लोगोंने अब अुन पत्थरोंकी कीमत बढ़ायी और अिन्सानकी कीमत घटायी। हीरोंकी खदान खोदनेके लिअे लाखों रुपये खर्च करते हैं, पर भू-गंगाके लिअे अुनके पास कुछ नहीं है! वह तो जमीनके अंदरका पानी है।

मैं आप लोगोंसे कहता हूं कि भू-गंगाको आप शादीके निमित्तसे बाहर निकालिये।

दा० मूं०

# अंग्रेजीकी गुलामी

बापू कात कर अंदर आये। दो भाअियोंको आपसमें अंग्रेजीमें बातचीत करते सुनकर अुन्होंने कहा: "हमारा कितना दुर्भाग्य है कि दो सगे भाअी भी अंग्रेजीमें बातचीत करते हैं! अुनमें से अेक तो कहता है कि मेरे मनमें विचार भी अंग्रेजीमें ही अुठते हैं। हम अंग्रेजीके कितने बड़े गुलाम हैं! यह गुलामी हमने अपने आप स्वीकार की है। अंग्रेजोंको मैंने बार-बार कहा है कि तुम्हारी यह बात गलत है, तुमने हमें यह नुकसान पहुंचाया है। परन्तु हमारे सामान्य व्यवहारमें दो सगे भाअी जो अंग्रेजीमें बातचीत करते हैं, अुसके लिअे मैं अुन्हें दोष नहीं दे सकता। यह दोष हमारा खुदका है। अगर हम अंग्रेजीमें बोल सकते हैं, तो अुसे हम अपना सद्भाग्य समझते हैं। हमारी यह महत्त्वाकांक्षा भी रहती है और अुसके पीछे हम अपना कितना ही समय खो देते हैं। अगर हम अंग्रेजी बोलनेमें भूल नहीं करते और अुसे सुन कर कोअी अंग्रेज हमारी पीठ ठोक देता है, तो हम फूले नहीं समाते। परन्तु हरअेक व्यक्ति अंग्रेजी सीखनेमें जो समय देता है, अुसका यदि जोड़ लगाया जाय, तो पता चलेगा कि देशकी सेवामें जो समय देना चाहिये — जिसकी आज बहुत जरूरत भी है — अुसमें तो दिया नहीं जाता और अिसके पीछे हजारों घंटे बरबाद कर देते हैं। तब भी हम पूरी अंग्रेजी तो सिख ही नहीं पाते। मेरे पास अैसे कितने ही बड़े-बड़े डिग्रीधारियोंके पत्र आते हैं, जिनकी अंग्रेजी बिलकुल अशुद्ध होती है और जिसे पढ़कर हम अूब ही जायं। शौकके खातिर वह भाषा अवश्य सीखने जैसी है। अुसमें अच्छे साहित्यका खजाना भी भरा पड़ा है, परन्तु अुसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिये। अेशियाटिक कान्फरेन्समें आये हुअे लोगोंमें अैसे कितने ही बड़े आदमी थे जो मुझे मिलने आये थे, लेकिन वे अपनी जापानी या तुर्की भाषामें ही बात करते थे। बीचमें अेक दुभाषिया रहता था, जो अुनकी तथा अंग्रेजी भाषा जानता था। तब मुझे लगा कि हिन्दुस्तानी भाषाको अिस समय सारे अेशियाकी भाषा बननेका मौका है। दुभाषियेका काम करनेवाला व्यक्ति अुस देशकी भाषा तथा राष्ट्रभाषा भी सीख लेगा। जब अैसा होगा तब अेशियाके सारे देशोंके बीच, जो आज अलग-अलग विभागोंमें बंटे हुअे हैं, परिवारका-सा मीठा सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा। यह अेक बहुत ही महत्त्वका काम होगा। परन्तु मैं किसको सुनाअूं? आप दोनों सगे भाअी पंजाबी तथा हिन्दी जानते हुअे भी अंग्रेजीमें बोल रहे हैं!"

[श्री मनुबहन गांधीकी 'भावनगर समाचार' में क्रमशः प्रकाशित हो रही डायरीमें से।]

(गुजरातीसे)


गुजरातीका नया प्रकाशन

**विवेक अने साधना**

लेखक : केदारनाथ

संपादक

किशोरलाल घनश्यामदास मशरूवाला

रमणीकलाल मगनलाल मोदी

की० ४–०–० डाकखर्च ०–१२–०


**विषय-सूची**


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 'हरिजन' पत्र | जीवणजी देसाअी | ४१७ |
| सर्वोदयका अर्थ | मगनभाअी देसाअी | ४१७ |
| यंत्र-बहिष्कार आन्दोलन | धीरेन्द्र मजूमदार | ४१९ |
| सरकारी वेतनमान और रचनात्मक कार्यकर्ता | श्रीकृष्णदास जाजू | ४२० |
| विनोबाकी तेलंगाना–यात्रा : १५ | दा० मूं० | ४२२ |
| अंग्रेजीकी गुलामी | मनु गांधी | ४२४ |
| सूची : १९४६-'४७ | | ४२४(क) |


www.vinoba.in